

श्री गुरु पूर्णिमा, श्री गुरु पूजन (दक्षिणा)

गुरु मनुष्य जीवन के विकास में सबसे महत्वपूर्ण है। गुरुब्रह्मा गुरु गोविन्द दोऊ खड़े किसी भी उपकार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना हिन्दु समाज की विशेषता है। गुरुपूर्णिमा पर्व का महत्व इसी दृष्टि से समझने की आवश्यकता है।

- आषाढ़ मास की पूर्णिमा हिन्दु समाज में गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध है। भारतीय समाज में वैदिक काल के समय से ही गुरु शिष्य परम्परा विद्यमान रही है।
- अपने यहाँ मान्यता है कि बिना गुरु के ज्ञान की प्राप्ति सम्भव नहीं।
- जीवन की सही दृष्टि गुरु के मार्गदर्शन से ही प्राप्त होती है। उदाहरण- देवताओं के गुरु 'बृहस्पति', भगवान श्री रामचन्द्र जी के गुरु 'वशिष्ठ' और 'विश्वामित्र', भगवान कृष्ण के गुरु 'सन्दीपनी', छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरु 'समर्थ रामदास', बन्दा वैरागी के गुरु 'गुरुगोविन्द सिंह', स्वामी विवेकानन्द के गुरु 'रामकृष्ण परमहंस', ऋषि दयानन्द के गुरु 'ऋषि विरजानन्द' आदि।
- गुरुजनों के प्रति पूज्यभाव यह हमारी प्रकृति है। आध्यात्मिक विद्या का उपदेश देने और ईश्वर का साक्षात्कार करा देने वाले गुरु को अपनी भूमि में साक्षात् परम ब्रह्म कहा गया है।
- महर्षि दयानन्द जी ने भी गुरु का महत्व समझाते हुए कहा है कि गु अर्थात् अन्धकार, रु अर्थात् मिटाने वाला। गु तथा रु अर्थात् अन्धकार को मिटाने वाला अर्थात् प्रकाश अर्थात् ज्ञान देने वाला।

- माँ ही प्रथम गुरु होती है।
- भारतीय संस्कृति में व्यक्ति ही नहीं तत्व को भी गुरु के रूप में स्वीकार करने की परम्परा ध्यान में आती है।

गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन एवं समर्पण का प्रतीक 'गुरु दक्षिणा' यह हमारी प्राचीन पद्धति है। अनेक उदाहरण-आरुणि, शिवाजी, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, कौत्स आदि ।

- संघ में व्यक्ति के स्थान पर तत्व निष्ठा का आग्रह। • संघ ने पवित्र भगवाध्वज को गुरु स्थान पर स्वीकार किया। यह राष्ट्र का

प्रतीक है। जिसे गुरु माना उसकी नित्य पूजा अर्थात् उसके गुणों को अपने अन्दर लाना चाहिए। • परमेश्वर की कृपा से मुझे जो भी प्राप्त हुआ है वह सब कुछ गुरु चरणों में समर्पित ।

"पतत्वेष कायो" एक संकेत मात्र है। इसका वास्तविक अर्थ केवल काया (शरीर) तक सीमित नहीं है। इसका अर्थ है मेरा शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा तथा वह सब कुछ जो मेरे पास किसी भी रूप में है उस सबका समर्पण।

श्री गुरुदक्षिणा - वर्ष में एक बार स्वयंसेवक श्रद्धाभाव से ध्वज के सम्मुख उपस्थित होकर उसका पूजन करते हैं अर्थात् श्री गुरु के सम्मुख दक्षिणा अर्पित करते हैं।

- यह वार्षिक शुल्क, चन्दा, संग्रह, दान, सहयोग राशि जैसा नहीं। अत्यन्त श्रद्धापूर्वक, पवित्र भाव से, अपनी दैनन्दिन आवश्यकताओं में से कुछ कटौती करते हुए सञ्चित द्रव्य (धन) को गुरु राष्ट्रदेव अर्थात्

भगवाध्वज के श्रीचरणों में विनीत भाव से समर्पित करना ही दक्षिणा है।

- जो दायें हाथ से अर्पित किया वह बायें हाथ को भी पता न चले अर्थात् कहीं भी इसकी चर्चा नहीं, प्रतिफल की लेशमात्र भी अपेक्षा नहीं।

- यह ३६५ दिन का संग्रहीत समर्पण। • प्राचीन कल्पना आय का १/१० भाग समाज के लिए अर्पण करना।

- श्रीगुरुदक्षिणा में धन के समर्पण के साथ-साथ 'मैंने दिया' इस भाव का भी समर्पण है अर्थात् मन में यह भाव भी न आये। परिणाम-

- स्वयंसेवकों में समर्पण भाव की निरन्तर वृद्धि । • स्वयंसेवकों में हीनता तथा अहंकार नहीं।

- दक्षिणा के संस्कारों के कारण शनैः शनैः लाखों स्वयंसेवकों में समाज के प्रति दायित्व बोध जागृत होता है।

- संघ आत्मनिर्भर ।

- संघ पर किन्हीं अन्य (बाह्य) लोगों का वर्चस्व नहीं।

अपेक्षित कार्यकर्ता

1-सम्पत् हेतु

2-गणगीत हेतु

3-एकलगीत हेतु

गुरु पूजन

4-अमृत वचन हेतु

5-प्रार्थना हेतु

6- वक्ता/मुख्य अतिथि

7-कार्यक्रम विधि बताने एवं मंचासीन बन्धुओं का परिचय कराने

8- कार्यक्रम स्थल से बाहर की व्यवस्था (स्वागत करते हुए, जूते, चप्पल वाहन व्यवस्थित एवं यथा स्थान खड़े करवाने तिलक लगाने, कार्यक्रम में बैठने से पूर्व ध्वज प्रणाम करना आदि सूचना देने हेतु ।

9-श्री गुरु पूजन (दक्षिणा) कार्यक्रम में पूजन हेतु लिफाफे देने एवं सूची बनाने हेतु अलग से कार्यकर्ता अपेक्षित है।

आवश्यक सामग्री :

- * मौसमानुकूल उपयुक्त एवं स्वच्छ स्थान (बिछावन सहित)।
- * चूना एवं रस्सी (रेखांकन हेतु)
- * ध्वज दण्ड हेतु स्टैण्ड (यदि स्टैण्ड की व्यवस्था नहीं है तो उचित संख्या में ईंटें) ।
- * चित्र (भारतमाता, डॉक्टर जी एवं श्री गुरुजी के मालाओं सहित)
- * मुख्य अतिथि / मुख्य वक्ता के लिये मंच / कुर्सियां ।
- * सज्जा सामग्री (रिबिन, आलपिनें, सेफ्टी पिनें, चादरें / चाँदनी, पर्दे, सुतली, गोंद आदि)।
- पुष्प, थाली, धूपबत्ती, प्लेट, माचिस, चित्रों हेतु मेजें, चादरें ।

गुरु पूजन

तिलक हेतु चन्दन अथवा रोली, अक्षत, कटोरी / थाली ।

कार्यक्रम यदि रात्रि में है तो समुचित प्रकाश व्यवस्था । ध्वनि वर्धक बैटरी सहित (यदि आवश्यक हो तो) ।

विशेष-

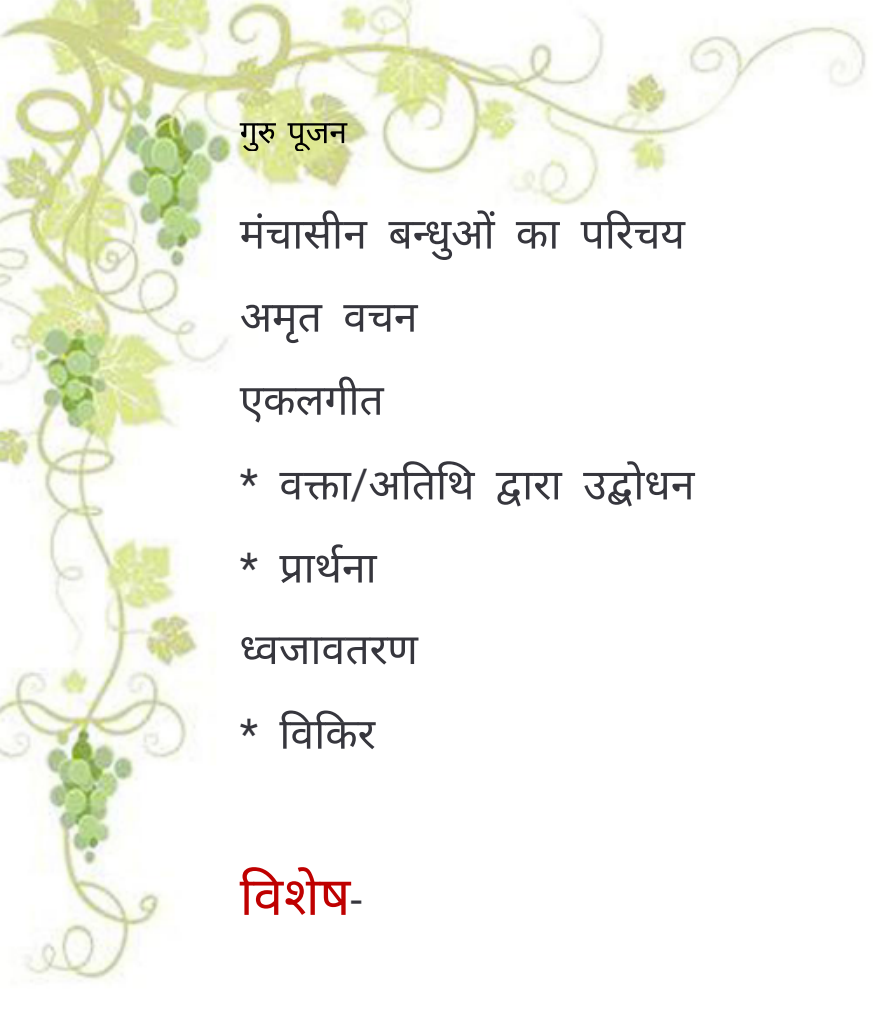
* श्री गुरु पूर्णिमा उत्सव हेतु भगवान वेदव्यास जी का माला सहित चित्र योग्य स्थान पर लगाना अपेक्षित है।

श्री गुरु दक्षिण कार्यक्रम हेतु लिफाफे, कागज, कार्बन (सूची बनाने हेतु) एवं पूजन के समय गीत के लिये टेपरिकार्डर एवं अच्छे गीतों की ध्वनिमुद्रिकायें (कैसिट्स) ।

* रक्षाबन्धन कार्यक्रम हेतु सभी स्वयंसेवक रक्षासूत्र लेकर आयेंगे।

कार्यक्रम विधि :

- * सम्पत्
- * गणगीत
- * अधिकारी आगमन
- * कार्यक्रम की विधि बताना एवं सूचनायें आदि
- ध्वजारोहण



गुरु पूजन

मंचासीन बन्धुओं का परिचय

अमृत वचन

एकलगीत

* वक्ता/अतिथि द्वारा उद्बोधन

* प्रार्थना

ध्वजावतरण

* विकिर

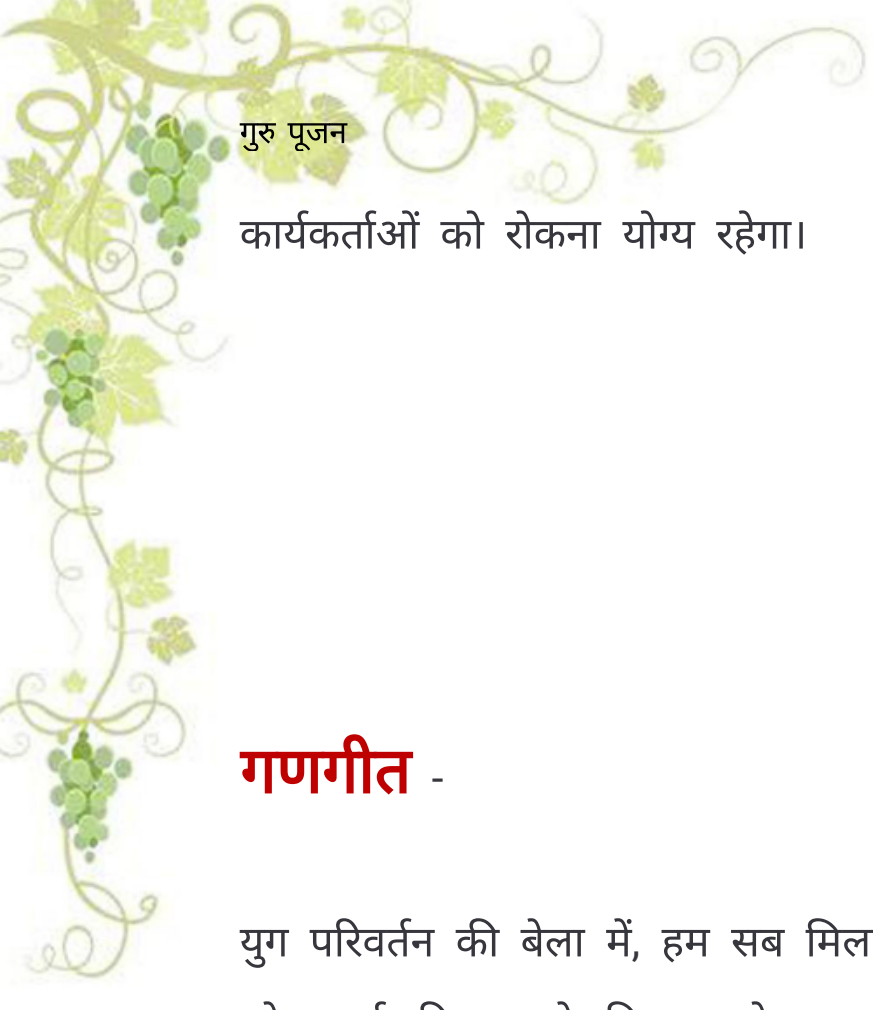
विशेष-

* अधिकारी आगमन के समय उत्तिष्ठ की आज्ञा होगी। पश्चात् आरम्भ एवं दक्ष की आज्ञा पर सभी स्वयंसेवक दक्ष में खड़े होंगे और ध्वजारोहण होगा।

* श्री गुरु पूर्णिमा के उत्सव में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारी द्वारा भगवान वेदव्यास के चित्र पर माल्यार्पण (यदि है तो) के बाद दीप प्रज्ज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित करना।

ध्वजारोहण तथा ध्वजावतरण के समय मुख्य अतिथि / वक्ता अग्रेसर (अभ्यागत) के बराबर तथा माननीय संघचालक / कार्यवाह अपने निर्धारित स्थान पर खड़े होंगे।

* कार्यक्रम के उपरांत परिचय की दृष्टि से शाखा टोली सहित प्रमुख



गुरु पूजन

कार्यकर्ताओं को रोकना योग्य रहेगा।

गणगीत -

युग परिवर्तन की बेला में, हम सब मिलकर साथ चलें।

देश धर्म की रक्षा के हित, सहते सब आघात चलें।

मिलकर साथ चलें २॥

शौर्य पराक्रम की गाथायें, भरी पड़ी है इतिहासों में

परंपरा के चिर उन्नायक, जिये निरन्तर संघर्षों में

हृदयों में उस राष्ट्र प्रेम के, लेकर हम तूफान चलें।

मिलकर साथ चलें २॥

कलियुग में संगठन शक्ति ही, जागृत का आधार बनेगी

एक सूत्र में पिरो सभी को, सपने सब साकार करेगी।

संस्कृति के पावन मूल्यों की, लेकर हम सौगात चलें।

मिलकर साथ चलें २॥

ऊँच-नीच का भेद मिटा कर, समरस जीवन को सरसायें।

फैलाकर आलोक ज्ञान का, परा शक्तियों को प्रकटायें
निविड़ निशा की काट कलिमा, लाने नवल प्रभात चलें।

मिलकर साथ चलें २॥

अडिग हमारी निष्ठा उर में, लक्ष्य प्राप्ति की तड़पन मन में
तन-मन-धन सब अर्पण करने, संघ मार्ग के दुष्कर रण में
केशव के शाश्वत विचार को, ध्येय मान दिन-रात चलें ।।।

मिलकर साथ चलें २॥

अमृतवचन क्र ०१

अपने इस संघ कार्य की प्रगति हो कि कभी कहलाने वाले इस पवित्र
ध्वज के सामने एक बार पुनः संसार नतमस्तक हो जाए, इसके चरणों
में अपने जीवन की भेंट चढ़ा इसकी पूजा करने के लिए बाध्य हो
जाए। यही आकाँक्षाएँ ही आवेश अपने अंतःकरण में उत्पन्न हो।।

अमृतवचन क्र ०२

मातृभूमि के वैभव के लिये, असंख्य विपत्तियों में भी फलाफल की चिन्ता किये बिना, जो सर्वास्वार्पण करे और ऐसा करते हुए भी, स्वयं को धन्य माने, वही सच्चा सेवक है।

पं० दीनदयाल उपाध्याय

अमृतवचन क्र ०३

व्यक्तिगत जीवन को समर्पित करते हुए समष्टि जीवन को परिपुष्ट करने के प्रयास को ही यज्ञ कहा गया है। सद्गुरु रूपी अग्नि में अयोग्य, अनिष्ट, अहितकर बातों का होम करना ही यज्ञ है। श्रद्धामय, त्यागमय, सेवामय, तपस्यामय जीवन व्यतीत करना ही यज्ञ है। यज्ञ ही अधिष्ठात्री देवता अग्नि है। अग्नि का प्रतीक है। ज्वाला और ज्वालाओं का प्रतिरूप है- हमारा परम पवित्र भगवा वज ।

प० पू० गुरुजी

अमृतवचन क्र ०४

संघ में न तो व्यक्तिगत अभिमान के लिये स्थान है और न संस्था के अभिमान के लिये अवसर है। संघ तो केवल अपने अखिल भारतवर्ष का अभिमानी है। फिर अपनी इस दिव्य ध्वजा को छोड़कर अन्य किसी प्रतीक के प्रति संघ किस प्रकार श्रद्धा रख सकता है ? हम दूसरे किसी ध्वज का अनादर करना नहीं चाहते, पर हमारी श्रद्धा प्राचीन काल के इतिहास और परम्परागत भगवे ध्वज को ही समर्पित है।

प. पू. श्रीगुरुजी

हमें जिस राष्ट्रीय मुक्ति की कामना है वह त्याग और कष्ट सहन के रूप में अपनी कीमत लिये बिना नहीं मिल सकती। यह अनुभव करने के लिये जिसके पास हृदय है और जो कष्ट सहन करने के लिये तत्पर है। उसे पूजा के पुष्प लेकर आगे आना चाहिये।"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

मेरा सपना है कि विश्व में भारत अपनी विद्या और चरित्र के बल पर जाना जाये। **परम् पूज्य रज्जू भैया**

एकलगीत क्र०-०३

गुरु पूजन

विश्व गुरु तव अर्चना में, भेट अर्पण क्या करें,
जबकि तन-मन-धन तुम्हारे, और पूजन क्या करें,
प्राच्य की अरुणिम छटा है, यज्ञ की आभा विभा है,
अरुण ज्योतिर्मय शिखा है, दीप दर्शन क्या करें ॥१॥
वेद की पावन ऋचा से, आज तक जो राग गूँजे ।
वन्दना के उन स्वरोँ में, तुच्छ वन्दन क्या करें ॥२॥
राम से अवतार आए, कर्म मय जीवन चढ़ाएँ।
अजिर तन तेरा चलाएँ, और अर्चन क्या करें ॥३॥
पत्र - फल और पुष्प - जल से, भावना ले हृदय तल से ।
प्राण के पल-पल विकल से, आज आराधन करें ॥४॥

एकलगीत

प्राचीन के मुख की अरुण ज्योति यह भगवाध्वज फहरे,
यह भगवाध्वज फहरे ॥ ध्रु ॥
यह वह्निशिखा का वेश किये, गत वैभव का संदेश लिये,
हिन्दू संस्कृति का अचल रूप, यह भगवाध्वज फहरे
यह भगवाध्वज फहरे । ॥१॥

गुरु पूजन

भारत माता का उच्च भाल- आर्यों के उर की अग्नि ज्वाल
इस राष्ट्रभक्ति का असर चिह्न, यह भगवाध्वज फहरे ।

यह भगवाध्वज फहरे । 12 11

यह चन्द्रगुप्त कर की कृपाण, विक्रमादित्य का शिरस्त्राण ?
इस आर्य देश का कठिन कवच, यह भगवाध्वज फहरे ।

यह भगवाध्वज फहरे । 13 ॥

वन्दा गुरु के बलिदानों से, रक्षित छत्ता के प्राणों से,
नीतिज्ञ शिवा का विजय केतु, यह भगवा ध्वज फहरे ॥

यह भगवाध्वज फहरे ॥4॥

एकलगीत

विश्व गुरु तव अर्चना में, भेंट अर्पण क्या करें ?

जबकि तन-मन-धन, तुम्हारे और पूजन क्या करें ?

प्राची के अरुणिम छटा है, यज्ञ की आभा - विभा है,

अरुण ज्योतिर्मय ध्वजा है, दीप दर्शन क्या करें ? ॥ 1 ॥

वेद की पावन ऋचा से, आज तक जो राग गूंजे,
वन्दना के उन स्वरों में, तुच्छ वन्दन क्या करें ? 112 ॥

राम के अवतार आएँ, कर्ममय जीवन चढ़ाएँ ,
अजिर तन तेरा चलाएँ, और अर्चन क्या करें ? ॥3॥

पत्र- फल और पुष्प जल से, भावना ले हृदय तल से,
प्राण के पल-पल विपल से, आज आराधन करें ॥ 4 ॥

विचारणीय बिन्दु

बौद्धिक क्र०-१

इस वर्ष ३ जुलाई २०२३ को गुरुपूर्णिमा है। 'गुरुपूर्णिमा' शब्दसमूह में 'पूर्णिमा' पूर्णमासी का बोध कराता है। पूर्णमासी हिन्दू समाज में अत्यन्त पवित्र पर्व के रूप में मान्यता प्राप्त है। प्रतिमास एक पूर्णमासी होती है। इस प्रकार एक वर्ष में बारह पूर्णमासी होती हैं। इनमें आषाढ़ मास की पूर्णमासी को गुरुपूर्णिमा के रूप में जाना जाता है। यह एक पर्व है, जो हम 'गुरुपूजा' के रूप में मनाते हैं।

इस पर्व पर गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर व्यक्ति को प्राप्त होता है। व्यक्ति ज्ञानवान् बन जीवन में योग्य मार्गदर्शन प्राप्त कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की क्षमता एवं सामर्थ्य जिसके चरणों में बैठकर प्राप्त करता है, उस श्रेष्ठ पुरुष को अपने समाज में गुरु का स्थान दिया है। ऐसे गुरु के इस श्रेष्ठ कार्य के कारण व्यक्ति अपनी कृतज्ञता को उसकी पूजा करते हुए प्रकट करता है। किसी भी उपकार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन हिन्दू समाज की विशेषता है। गुरु पूर्णिमा पर्व का महत्त्वइस दृष्टि से समझने योग्य है।

यासपूर्णिमा' के नाते भी गुरुपूर्णिमा की प्रसिद्धि है। यह वेदव्यास जी को स्मरण कराने वाला दिवस है। वेदव्यासजी को 'राष्ट्रगुरु' के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। गुरु का महत्त्व व्यक्ति के जीवन में जितना है, उससे अधिक वेदव्यासजी जी का महत्त्व राष्ट्रजीवन में स्वीकार किया गया है। वेदव्यासजी ने भारतीय ज्ञान को सुनियोजित ढंग से सूत्र, सुगठित करने का अभूतपूर्व कार्य किया है। उन्होंने अपौरुषेय वेदों का सम्यक् रूपेण वर्गीकरण कर ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद के रूप में लिपिबद्ध करने का महान कार्य किया है। इससे पूर्व वेद एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को कण्ठस्थ करने की परम्परा द्वारा प्राप्त होते रहे थे। इसीलिए वेद 'श्रुति' के नाते विख्यात रहे हैं। 'श्रुति' यानी सुनकर कण्ठस्थ कर आगे की पीढ़ी को सुनाकर ज्ञान की सरिता का सतत प्रवाहमान् बनाए रखना।

महाभारत, उपनिषदों, पुराणों, भागवत् आदि श्रेष्ठ ग्रन्थों के रचनाकर वेदव्यासजी माने जाते हैं। 'गीता' जैसी महान रचना भी 'महाभारत' का ही अंग है। उनसे मानव जीव के उन्नयन हेतु कर्मप्रधान चिन्तन प्राप्त हुआ। यह ज्ञान वेदव्यासजी ने सहज ही में सभी को सुलभ कराया है। इसी कारण पूरा राष्ट्र 'व्यासपूर्णिमा' पर उन्हें स्मरण करता है। गुरु के प्रति आदर, भक्ति एवं श्रद्धापूर्ण व्यवहार भारतीय समाज में कब प्रारम्भ हुआ, यह शोध का विषय है। "मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, गुरुदेवो भव" उक्ति सर्वप्रसिद्ध है। माता, पिता के साथ ही गुरु

को भी देवता माना गया है। वेदों की प्राचीनता की भाँति गुरु के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति की परम्परा भी अति प्राचीन है। गुरु-शिष्य परम्परा का उल्लेख अपने शास्त्रों में हुआ है। इस सम्बन्ध में धर्मग्रन्थों में प्रेरणाप्रद गाथायें पढ़ने को मिलती है। भारतीय वाङ्मय में देवासुर संग्राम का वर्णन है। देवताओं के गुरु वृहस्पति तथा असुरों के गुरु शुक्राचार्य के होने का उल्लेख है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम बाल्यकाल में वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने हेतु रहे थे। योगेश्वर श्रीकृष्ण का भी संदीपनि के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करना प्रसिद्ध है। अतः यह स्पष्ट है कि गुरु-शिष्य परम्परा की प्राचीनता के साथ गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना भी अत्यन्त प्राचीन परम्परा के रूप में इस देश में विद्यमान है।

इतना ही नहीं, वरन् गुरु-शिष्य परम्परा का विद्यमानता चारों युग-सतयुग, द्वापर, त्रेता एवं कलियुग में होने का प्रमाण है। गुरु आश्रमों में शिष्यों की शिक्षा व्यवस्था रहती आई है। गुरु अत्यन्त निःस्पृही एवं निःस्वार्थी जीवनयापन करते हुए शिष्यों को शिक्षा प्रदान कर उन्हें ज्ञानवान् बनाने के साथ ही उनके जीवन की दिशा निर्धारित कराते रहे हैं। व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के कल्याणार्थ जीवन भर कार्यरत रहने के कारण गुरु अत्यन्त श्रद्धास्पद रहे हैं। सामान्य व्यक्ति के अतिरिक्त राजाओं के भी गुरु होने का उल्लेख है। दशरथ गुरुवशिष्ठ के मार्गदर्शन में राजकाज चलाते थे। महाभारत में कृपाचार्य एवं द्रोणाचार्य का वर्णन है। कलियुग में चाणक्य, स्वामी समर्थ रामदास एवं विद्यारण्य प्रसिद्ध हैं।

समाज जीवन में गुरु के कार्यों के महत्त्व को विचारकों एवं विद्वानों ने अनुभव किया कि प्रसिद्ध उक्ति "गुरुदेवो भव" गुरु की महिमा को समुचित ढंग से व्यक्त नहीं करती। गुरु केवल देवता नहीं वरन् साक्षात् ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश है। अतः उसे उसी रूप में देखते हुए नमस्कार करना उचित रहेगा ।

'गुरुब्रह्मा गुरुविष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अनुभव में आगे चलकर यह भी आया कि गुरु की कृपा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। जीवन को योग्य दिशा प्राप्त नहीं हो सकती। मानवीय जीवन के श्रेष्ठ गुणों का अंकुरण तथा पूर्ण विकसित पुण्य के रूप में प्रकटीकरण गुरु की कृपा से ही सम्भव है। गुरु की कृपा से ही ईश्वर का साक्षात्कार भी सम्भव होता है। इसलिए यह कहा गया-

'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय । बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो मिलाय ॥

गुरु की कृपा से सामान्य व्यक्ति में असाधारण प्रतिभा, अनोखी कर्मठता तथा अदम्य आत्मविश्वास एवं साहस प्रकट होता है, यह

इतिहास में हुई घटनाओं से प्रमाणित है। मूलशंकर नामक बालक स्वामी बिरजानन्द के रूप में योग्य गुरु के चरणों में बैठकर वेदों की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने में सफल हुआ। ऐसे ही बालक नरेन्द्र, रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में आकर उनकी कृपा से एक दिन स्वामीविवेकानन्द के रूप में हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता का डंका जगत में बजाकर विश्व को चकित कर गया। चाणक्य, विद्यारण्य, समर्थ स्वामी रामदास आदि के नाम इसी परम्परा में विख्यात हैं।

परिवार, कुल, पन्थ, सम्प्रदाय आदि में गुरु के महत्व को स्वीकार करने की परम्परा भी हिन्दू समाज में विद्यमान हैं। सिक्ख तथा जैनमत में गुरु परम्परा विद्यमान है। समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गुरुभक्ति का दृश्य देखने को मिलता है। यथा अखाड़ों में मल्लयुद्ध (कुश्ती) सिखाने वाले पहलवान भी गुरु की संज्ञा प्राप्त कर सम्मान पाते हैं। स्व० गुरु हनुमान् इस दृष्टि से पर्याप्त चर्चित हुए हैं। हिन्दू समाज में गुरु की प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा सर्वमान्य है।

रा० स्व० से० संघ ने पूरे राष्ट्र को सतत प्रेरणा एवं मागदर्शन देने वाले भगवाध्वज को गुरु माना है। व्यक्ति के जीवन की अवधि राष्ट्र के सन्दर्भ में नगण्य है। राष्ट्र का जीवन सहस्रों वर्ष का होता है। व्यक्ति सदा राष्ट्र के सामने प्रस्तुत नहीं रह सकता है। दूसरे व्यक्ति का पूरा जीवन समाप्त होने के बाद ही ज्ञात होता है कि उसका जीवन प्रेरणास्रोत है या नहीं। इसलिए, व्यक्ति को गुरु मानने की परम्परा संघ

में नहीं है।

भगवा ध्वज को गुरु मानकर संघ के सभी कार्यक्रम उसकी छत्रछाया में चलते हैं। वह हमारा प्रेरणास्रोत तथा हमारी संस्कृति एवं धर्म का संवाहक है। हमारे महापुरुषों का स्मरण कराने वाला है। हमारे साधु, महात्माओं तथा सन्तों के परिधान के गेरुए रंग से युक्त यह भगवाध्वज त्याग एवं समर्पण की प्रेरणा भी देता है। हमारे यहाँ होने वाले यज्ञों में उठती अग्नि की आभा से प्रदीप्त भगवाध्वज हमारे सम्पूर्ण इतिहास का बोध कराने की क्षमता रखता है।

दण्ड पर आरूढ़ वस्त्रखण्ड को जड़ मानकर शंका करने वाले प्रश्न कर सकते हैं कि जो बोलने की क्षमता नहीं रखता और स्वयं चल-फिर नहीं सकता, वह हमारा मार्गदर्शन कैसे कर सकता है? हमारी शंकाओं का समाधान कैसे होगा? इस प्रकार का विचार भ्रामक है। हम निर्जीव पदार्थ से भी प्रेरणा, शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करते हैं। ऐसा अनेक घटनाओं से सिद्ध होता है। उदाहरणतः एकलव्य के धनुर्विद्या में निष्णात होने की घटना है। द्रोणाचार्य की प्रस्तर प्रतिमा उसके लिए यह विद्या प्राप्त करने की प्रेरणास्रोत बनी। यही सत्य भगवाध्वज के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए।

व्यक्ति के स्थान पर किसी प्रतीक को गुरु मानकर उसकी छत्रछाया में कार्य करने की नई परिपाटी रा०स्व०संघ ने डाली है, ऐसा नहीं है।

इतिहास में ऐसी घटनायें पूर्वकाल में भी हुई हैं। हमें स्मरण होगा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वनगमन के बाद उनकी चरणपादुकाओं को सिंहासन पर रखकर भरत ने राजकाज चलाया था। सिख पन्थ के दसवें गुरु गुरू गोविन्द सिंह जी ने जब यह अनुभव किया कि गुरु परम्परा आगे जारी रखने के लिए अपेक्षित योग्य व्यक्ति मिलना सम्भव नहीं है, तो उन्होंने भी व्यक्ति के स्थान पर 'गुरु-ग्रंथ' रख उससे प्रेरणा लेने की परम्परा प्रारम्भ की। हम भी आज भगवाध्वज के रूप में अपने गुरु का पूजन कर अपने जीवन के लक्ष्य को स्मरण करने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं।

भारत माता की जय

गुरुपूजा और समर्पण भाव

.